KM jio_KM.qxd 08-10-2023 20:39 Page 1

जम्मू यूनिवर्सिटी पोस्ट

उत्कृष्ट भविष्य को अग्रसर

अक्तूबर, 2023 | जम्मू | अंक 2

जेयू ने मनाया 54वां स्थापना दिवस, कुलपति ने साझा की उपलब्धियां

महाजन रोहन

जम्मू विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1969 में हुई थी और पिछले दो वर्षों से विश्वविद्यालय मौजूदा कुलपति, प्रोफेसर उमेश राय, की देखरेख एवं मार्गदर्शन में अपना स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मना रहा है। 5 सितंबर 2023 को विश्वविद्यालय ने अपना 54वां स्थापना दिवस समारोह मनाया जिसमें जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा मुख्यातिथि थे, जबकि उनके सलाहकार राजीव राय भटनागर सम्मानित अतिथि रहे।

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने जेयू के स्थापना समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति, संकाय सदस्यों और छात्रों को बधाई दी और राष्ट्र के सर्वांगीण और त्वरित विकास में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में उपराज्यपाल ने कहा कि डिजाइन योर डिग्री और कॉलेज ऑन व्हील्स जैसी कई ऐतिहासिक पहलों के साथ जम्मू विश्वविद्यालय अनुसंधान, नवाचार और आर्थिक विकास में विश्व स्तर पर जम्मू-कश्मीर की छवि को उज्ज्वल करने में बड़ा योगदान दे रहा है।

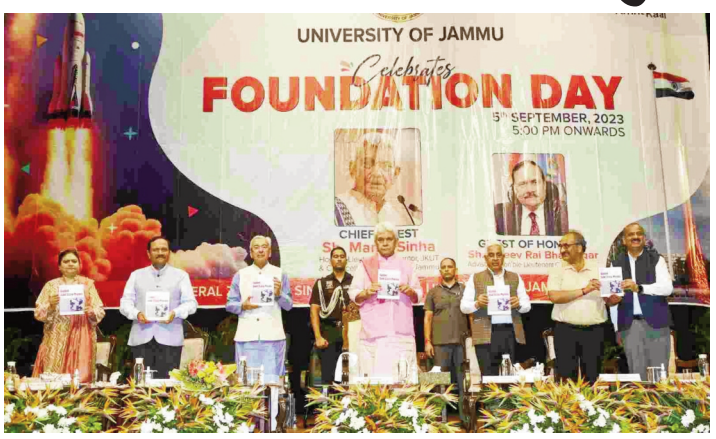

उपराज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय के भविष्यवादी दृष्टिकोण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से चुनौतियों से निपटने के लिए सर्वोत्तम शैक्षणिक प्रथाएँ व शीर्ष श्रेणी का कुशल कार्यबल सुनिश्चित हुआ है। उपराज्यपाल ने इस अवसर पर शिक्षण समुदाय को परिसर में स्वतंत्र सोच, रचनात्मकता, अनुसंधान और नए आविष्कारों को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि एनईपी-2020 विश्वविद्यालयों में शिक्षा को फिर से परिभाषित करेगा व पाठ्यक्रम को और ज़्यादा लचीला बनाएगा और पहल के लिए अपना पूरा समर्थन व्यक्त किया। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा अंतहीन अन्वेषण और सीखने की यात्रा है। युवा मन में बड़ी कल्पना को प्रज्वलित करना, नए विचारों को प्रोत्साहित, स्पष्ट लक्ष्य प्रदान, आगे की यात्रा के लिए समर्पण, आत्मविश्वास, आशावाद और जिज्ञासा पैदा करने के लिए कक्षाओं में एक प्रणाली स्थापित

● शेष पृष्ठ 4 पर

सामुदायिक रेडियो लाने वाला जेयू बना पहला विश्वविद्यालय

जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने जम्मू विश्वविद्यालय के पहले सामुदायिक रेडियो स्टेशन - 91.2 एफएम ध्वनि जेयू का उद्घाटन किया। एलजी ने संतोष व्यक्त किया कि यह रेडियो स्टेशन जन भागीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करेगा, छात्रों व समुदाय के हितों की सेवा में मदद करेगा, समाज से जुड़ेगा और आम आदमी से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता पैदा करेगा। वहीं कुलपति प्रो. राय ने कहा कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन विश्वविद्यालय की सामाजिक जिम्मेदारी की दिशा में एक कदम है। रेडियो विश्वविद्यालय के विभिन्न हितधारकों की बहुभाषी आवाजों को बढ़ावा देने, प्रचारित और प्रसारित करने के माध्यम के रूप में और देश के एकीकृत विकास के लिए राष्ट्रीय प्रयास में भाग लेने के लिए लोगों को प्रेरित करने वाले विभिन्न विचारों के आदान-प्रदान की साइट के रूप में कार्य करेगा। प्रो. उमेश राय ने कहा कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन विश्वविद्यालय की सामाजिक जिम्मेदारी की दिशा में एक कदम है।

● शेष पृष्ठ 4 पर

भव्य रैली के साथ विश्वविद्यालय ने मनाया 77वां स्वतंत्रता दिवस

प्रकृति संब्याल

जम्मू विश्वविद्यालय में 77वें स्वतंत्रता दिवस का ऐतिहासिक, उत्साहपूर्ण और गौरवपूर्ण उत्सव व जश्न पूरे जोश-खरोश के साथ मनाया गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग और संगठनों द्वारा इस दिन को यादगार बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभागों के कार्यक्रमों की सजावट और छात्रों की भरपूर ऊर्जा ने इस उत्सव को और भी शानदार बनाया। जेयू ने कुलपति, प्रोफेसर उमेश राय, के नेतृत्व में 'मेरी माटी, मेरा देश' के तहत 77वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में भव्य तिरंगा रैली का आयोजन किया गया, जिसमें विशाल संख्या में विद्यार्थियों एवं कर्मचारी सदस्यों ने भाग लिया।

यहां के विभिन्न शिक्षण विभागों ने भी अपने-अपने कार्यक्रमों से स्वतंत्रता दिवस पर चार चाँद लगा दिए। विज्ञान, कला, साहित्य जैसे विभागों ने विशेष संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें छात्रों ने भाषण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन विभाग के छात्रों ने एक अद्वितीय तथा रंगीन उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव के थीम 'एक राष्ट्र, अनेक अभिव्यक्ति' पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। विकास शर्मा (उप निदेशक, सूचना), श्रुति अवस्थी (क्षेत्रीय निदेशक, आईजीएनसीए) और डॉ. गरिमा गुप्ता (विभाग प्रमुख, एवं

मीडिया अध्ययन, जेयू) ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ओर माइक्रोबायोलॉजी सोसायटी के सहयोग से रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। माइक्रोबियल और वायरल रोग के विषय के अंतर्गत रंगोली की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रणनीतिक और क्षेत्रीय अध्ययन विभाग (डीएसआरएस) ने डीएसआरएस के सेमिनार हॉल में 'जम्मू-कश्मीर के गुमनाम नायक' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

क्लस्टर यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू (सीयूजे) के डीन रिसर्च स्टडीज और बॉटनी और जूलॉजी विभागों के कार्यालय ने देशभक्ति के उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया। सीयूजे के कुलपति प्रोफेसर बेचन लाल ने छात्रों और कर्मचारियों के साथ राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता और परिवर्द्धन के लिए ÷पंच प्राण प्रतिज्ञा÷ ली। समारोह से पहले शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की गई जिसके बाद सांस्कृतिक गतिविधियां हुई और राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ। वनस्पति विज्ञान और प्राणीशास्त्र दोनों विभागों के संकाय सदस्यों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

कठुआ परिसर, जम्मू विश्वविद्यालय ने 'मेरी माटी मेरा देश-मिट्टी को नमन वीरों को वंदन' अभियान के तहत दिवस मनाया। दिन की शुरुआत एक जीवंत तिरंगा रैली के साथ हुई। विश्वविद्यालय को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तिरंगे और तिरंगे के रंगों की रौशनी से सजाया गया। कैम्पस में तिरंगा फहराकर विद्यार्थियों ने भारतीय स्वतंत्रता सैनानियों को याद किया। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर विद्यार्थी अत्यधिक ऊर्जा से भरपूर थे। वे नृत्य, गीत और दृढ़ संकल्प के साथ स्वतंत्रता के महत्व को साझा करते हुए उत्सव में भाग लिया। विभिन्न विभागों के कार्यक्रमों, सजावट की रौशनी, और छात्रों की ऊर्जा ने इस उत्सव को और यादगार बनाया।

जम्मू विश्वविद्यालय में 'यूथ 20' परामर्श का आयोजन

देश-विदेश के कई प्रतिनिधियों व छात्रों ने लिया भाग

रश्मि शर्मा

जम्मू-कश्मीर में जी20 प्राथमिकताओं पर युवाओं को अपने दृष्टिकोण और विचार व्यक्त करने हेतु एक मंच प्रदान करने के लिए जम्मू विश्वविद्यालय में शांति-निर्माण और सुलह पर दो दिवसीय यूथ-20 परामर्श बैठक का आयोजन हुआ। इसका समापन मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह और जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल एवं जम्मू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोज सिन्हा ने किया। इस दो दिवसीय यूथ कॉन्क्लेव का आयोजन जम्मू विश्वविद्यालय में जी-20 प्रेसीडेंसी के ढांचे के तहत डिपार्टमेंट ऑफ यूथ अफेयर्स के तत्वावधान में किया गया। उद्घाटन सत्र में जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर उमेश राय ने कहा कि ÷जम्मू-कश्मीर हमेशा ज्ञान का केंद्र रहा है।÷ उन्होंने बताया कि उपराज्यपाल के नेतृत्व में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए मिशन यूथ जैसी कई योजनाएं शुरू की गई हैं।

अपने संबोधन में उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शांति निर्माण में युवा पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से विश्वास और आपसी सम्मान पर आधारित वैश्विक समाज के निर्माण के लिए महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद के आदर्शों का पालन करने का आग्रह किया। उपराज्यपाल ने कहा ÷मैं युवाओं को मेल-मिलाप लाते और नागरिकों की भलाई के लिए एक नई दुनिया को आकार देते हुए देखता हूँ। समान मूल्यों, आकांक्षाओं और निस्वार्थ सेवा की प्रतिबद्धता के साथ युवा शांति, समृद्धि, मित्रता, सहयोग और प्रगति के क्षितिज का विस्तार करेंगे।÷ विश्वविद्यालय में युवा-20 परामर्श में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए वर्चुअल मोड के माध्यम से केंद्रीय राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि ÷आज़ादी के बाद से तीन पीढ़ियां बीत चुकी हैं जिनमें प्रतिभा व क्षमताओं की कोई कमी नहीं थी, लेकिन अनुकूल माहौल की कमी थी जिसे अब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने उपलब्ध कराया है।÷ उन्होंने यह भी बताया कि यह एक महान अवसर है लेकिन साथ ही एक चुनौती और विशेषाधिकार भी है क्योंकि आज के युवा ही इंडिया@2047 का चेहरा तय करेंगे। इस यूथ-20 कंसल्टेशन मीट में लगभग 18 अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय वक्ताओं के साथ तीन पैनलों में विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। देशभर से आए वक्ताओं ने युवाओं को विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देकर जागरुक किया। इसमें इंडोनेशिया,दक्षिण अफ़्रीका, रूस और कोरिया जैसे जी-20 देशों और नाइजीरिया, ईरान, मेडागास्कर, अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों के 17 युवा प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

KM jio_KM.qxd 08-10-2023 20:39 Page 2

संपादकीय

उपराष्ट्रपति का दौरा रहा जेयू छात्रों के लिए उत्साह वर्धक

डॉ. परदीप सिंह बाली

भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हाल ही में जम्मू-कश्मीर का ऐतिहासिक दौरा किया। जम्मू विश्वविद्यालय के विशेष दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि भारतीय उपराष्ट्रपति की यात्रा विशेष दीक्षांत समारोह का कई स्तरों पर अत्यधिक महत्व है। यह अवसर विश्वविद्यालय और उसके हितधारकों के लिए बड़े सम्मान और गौरव का क्षण दर्शाता है। उपराष्ट्रपति की मौजूदगी ने विशेष दीक्षांत समारोह की भव्यता और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए सरकार की मान्यता के प्रमाण के रूप में कार्य किया। अपनी यात्रा के दौरान उपराष्ट्रपति ने एक प्रेरणादायक भाषण दिया। उनके भाषण में राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में शिक्षा के महत्व और जम्मू विश्वविद्यालय जैसे विश्वविद्यालयों द्वारा प्रतिभा को पोषित करने और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले तत्वों पर जोर दिया गया।उपराष्ट्रपति ने क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उपराष्ट्रपति की यात्रा से जम्मू विश्वविद्यालय के छात्रों में उत्साह और प्रेरणा की भावना पैदा हुई। उपराष्ट्रपति ने 1969 से उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित संस्थान, जम्मू विश्वविद्यालय से जुड़े होने के सम्मान और विशेषाधिकार को मान्यता दी। ÷मुझे अंधेरे से प्रकाश की ओर ले चलो÷ के आदर्श वाक्य द्वारा निर्देशित विश्वविद्यालय का लक्ष्य न केवल उत्कृष्ट पेशेवरों का उत्पादन करना है, बल्कि मानवता की सेवा के लिए आवश्यक गुणों के रूप में करुणा और दयालुता भी पैदा करता है। उपराष्ट्रपति ने स्थानीय भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए जम्मू विश्वविद्यालय की पहल की सराहना की, विशेषकर डोगरी भाषा के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में उनकी दूरदर्शिता की। इसके अतिरिक्त उन्होंने ÷डुग्गर- दर्पण÷ बहु-कला उत्सव के आयोजन में विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाता है। छात्रों को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने उनके जीवन में एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर के रूप में दीक्षांत समारोह के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उन्हें समाज पर अपनी छाप छोड़ने और अपने मातृ संस्थान के विकास पथ में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि कुलाधिपति और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और कुलपति प्रोफेसर उमेश राय के नेतृत्व में जम्मू विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रामाणिक कार्यान्वयन का एक शानदार उदाहरण बनकर उभरा है और यह उपराष्ट्रपति द्वारा प्रमाणित किया गया। जम्मू विश्वविद्यालय के विशेष दीक्षांत समारोह में उपराष्ट्रपति की यात्रा एक महत्वपूर्ण अवसर था जिसने क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और बौद्धिक कौशल का जश्न मनाया। उनकी अंतर्दृष्टि पूर्ण टिप्पणियों ने छात्रों को परिवर्तन को अपनाने, अपनी भाषाओं और संस्कृतियों का पोषण करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी उपस्थिति ने संवाद, प्रेरणा और सहयोग के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया। अंततः जम्मू विश्वविद्यालय में शिक्षा की समग्र उन्नति में योगदान दिया।

'हम चाहते हैं कि छात्र आलोचनात्मक विचारक बनें' - डीन एकेडमिक अफेयर्स

प्रकृति संब्याल

प्रश्न. जम्मू विश्वविद्यालय के छात्रों को मुख्य रूप से कक्षा शिक्षण से परे अनुभव प्रदान करने वाला शिक्षा का आपका दर्शन क्या है?

मेरी राय में हाइब्रिड तरीका सीखने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि इससे छात्रों को यह भी पता चलता है कि कक्षा में क्या-क्या पढ़ाया जाएगा। जहां तक विश्वविद्यालय का सवाल है हम चाहते हैं कि छात्र आलोचनात्मक विचारक बनें। जैसा कि हम जानते हैं हमारे पाठ्यक्रमों की अवधि बहुत कम होती है इसलिए शिक्षक के लिए सब कुछ अच्छे से बताना मुश्किल होता है। यदि हम आलोचनात्मक विचारकों का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि छात्र भी चर्चाओं में योगदान दें। हमें सीखने के मिश्रित तरीके पर जाने की जरूरत हैं। उदाहरण के लिए फ़्लिप्ड लर्निंग जहां छात्र पहले से ही उस पाठ्यक्रम के बारे में पढ़ता है जो कक्षा में पढ़ाया जाने वाला है और फिर वह आकर उन पर चर्चा करता है। हमारे सिस्टम में स्नातकोत्तर स्तर पर सेमिनार चर्चा नहीं होती है। यह आने वाले समय की एक मांग है क्योंकि समय बदल रहा है। हम केवल शिक्षण कार्य तक ही सीमित हैं लेकिन हमें खुद में विविधता लानी होगी।

प्रश्न. चूंकि आप भौतिक विज्ञान पृष्ठभूमि से हैं और आपके पास काफी अनुभव भी है, तो आप छात्रों को क्या संदेश देना चाहते हैं?

मुख्य बात यह होगी कि हमें एक टीम के रूप में काम करना होगा। हमें एक शिक्षक और छात्र तथा एक

छात्र और दूसरे छात्र के बीच एक टीम भावना पैदा करनी होगी। अगर हमारे पास वह टीम भावना है तो हम अधिक सफल होंगे और यही मैंने 1000 से अधिक लोगों के बड़े सहयोग से सीखा है, जहां हमने एक टीम के रूप में काम किया। टीम के बीच समन्वय होना चाहिए। एक विश्वविद्यालय के रूप में हमें एक पूरी टीम में काम करना होगा ताकि हम मिलकर विश्वविद्यालय का उत्थान कर सकें, न कि कुछ विभागों की तरह कुछ का उत्थान किया जा सके और कुछ का नहीं और ये ज़िम्मेदारी यूनिवर्सिटी प्रबंधन की है।

प्रश्न. आप आने वाले दिनों में जम्मू विश्वविद्यालय को नई शिक्षा नीति के संदर्भ में किस तरह से देखना चाहेंगे?

विश्वविद्यालय छात्रों को नौकरी खोजनेवाला नहीं बना रहा बल्कि उन्हें नौकरी देनेवाला बनाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन हर कोई उद्यमी नहीं बन सकता, हर कोई शिक्षक नहीं हो सकता। हमें उस इकोसिस्टम को बनाने की जरूरत है जहां हर किसी को नौकरी पाने या नौकरी देने का मौका मिले इसलिए ये सभी बदलाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ-साथ डिजाइन योअर डिग्री प्रोग्राम को आगे बढ़ाने हेतु लिए गए हैं। हम छात्रों को आलोचनात्मक अध्ययनकर्ता के रूप में चाहते हैं न कि संकुचित मानसिकता लिए हुए शिक्षार्थी के रूप में। सबसे अच्छा उदाहरण विक्रम साराभाई हैं जो विदेश में पढ़ाई करने गए लेकिन एक सपना लेकर यहां आए और उन्होंने द्धस्त्रह की स्थापना की और सभी को आश्वस्त किया कि यह विकास के मामले में भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए हम यह भी चाहते हैं कि हमारे छात्र खुले दिमाग के साथ आगे बढ़ें जहां वे दुनिया में अपनी नाम कर सकें।

प्रश्न. डीन एकेडमिक अफेयर्स की ओर से समूचे विश्वविद्यालय के लिए क्या संदेश रहेगा?

संदेश बहुत सरल है, हम चाहते हैं कि जम्मू विश्वविद्यालय विकास की दिशा में आगे बढ़ता रहे। हम यह भी चाहते हैं कि विश्वविद्यालय विश्व मानचित्र पर आए। हम चाहते हैं कि यह संस्थान विश्व के प्रमुख संस्थानों में से एक हो और यह हमारा प्राथमिक लक्ष्य है। साथ ही हम यह भी चाहते हैं कि यह विश्वविद्यालय छात्र केंद्रित हो और हमें इस पर एक टीम के रूप में अधिक काम करना है।

'मैं रोकूँगी नहीं इस बार भी'

महाजन रोहन

गुमसुम सी रातें हैं चेहरे पे मायूसी है,
सीधा सीधा कहूँ तो उनके जाने की उदासी है।

वो आए अरसों बाद हैं और पल भर में चले जाएँगे,
मैं रोकूँगी नहीं इस बार भी मेरे आँसू न रुक पाएँगे।

वो जितना भी वक़्त देंगे मुझे मैं कीमती समझ कर बिताऊँगी,
शिकायतों की ग़ज़लें नहीं मैं प्यार की नज़्में गाऊँगी।

वो शौहर हैं मेरे बाद में पहले वतन उनकी मोहब्बत है,
वो देश के सिपाही हैं उस वर्दी की बड़ी इज्ज़त है।

मैं उनके दिल का राज़ हूँ वो मेरे दिल की आवाज़ हैं,
वो गीत हैं मेरी सुबहों के और मेरी शामों की नमाज़ हैं।

अब वक़्त होने आया है ख़ैर अलविदा उनसे कहने का,
वादा करती हूँ उनसे उनकी सदा होकर रहने का।

सुनो ! चिट्ठी वक़्त पर लिखते रहना हाल अपना बताते रहना,
दूरी है तो क्या हुआ प्यार अपना जताते रहना।

मैं भी इश्क़ निभाऊंगी ऐसा हदें पार कर जाऊँगी,
बस आज तुम्हारे जाने पर मैं पलट कर न देख पाऊँगी,
और रोकूँगी नहीं इस बार भी शायद आँसू न रोक पाऊँगी।

पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग: 'मेरा विभाग मेरा गौरव'

कोमल देवी

जब से जम्मू विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग का आगमन हुआ है, विभाग तब से ही लोगों में ज्ञान प्रसारित करने में जुट गया है। बात करें हाल ही में आयोजित हुए कुछ कार्यक्रमों के बारे में तो

'पंच प्रण' के उद्घाटन पर सामाचार पत्र के रूप में 'जम्मू यूनिवर्सिटी पोस्ट' का उद्घाटन हुआ, जिसका उद्देश्य विश्ववद्यालय के कार्यों को एक्सपोजर देना है। 'जम्मू यूनिवर्सिटी पोस्ट' न्यूज़लेटर चार अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित होता है जिसमें 'हिंदी, अंग्रेजी, डोगरी और उर्दू' शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग के सहयोग से राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान ने 'ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व और वास्तविकता' कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें ट्रांसजेंडर्स की जिंदगी को स्पॉटलाइट मिली, उनकी परेशानियों को जानने का मौका मिला और उन्हें अपनी परेशानियों को सुनाने का एक मंच मिला।

यहीं नहीं विभाग द्वारा 'दो दिवसीय फ़ोटोग्राफ़ी कार्यशाला' का आयोजन किया गया जिसमें रक्षा मंत्रालय के जनसंपर्क कार्यालय के फोटोग्राफी अधिकारी एसएन आचार्य रिसोर्स पर्सन थे। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विभाग के छात्रों को कैमरा के बारे में जानकारी देना एवं फ़ोटोग्राफ़ी सीखाना था ताकि भविष्य में वे फोटो पत्रिकारिता के लिए खुद को तैयार कर सकें।

पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग ने अंग्रेजी विभाग के सहयोग से '21वीं सदी में रचनात्मकता की अभिव्यक्ति' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें डॉ. अर्पण याग्निक प्रशंसित टेडेक्स वक्ता और एसोसिएट प्रोफेसर, पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी यू.एस.ए. संसाधन व्यक्ति थे।

हैंडबॉल को पुनर्जीवित करने के प्रयास में विश्वविद्यालय

महाजन रोहन

हैंडबॉल एक टीम खेल है जिसमें सात खिलाड़ियों की दो टीमें आपस में खेलती हैं। एक टीम के कुल 12 खिलाड़ी होते हैं, जिनमें से गोलकीपर सहित 7 खिलाड़ी खेलते हैं तथा शेष 5 खिलाड़ी सब्स्टीट्यूट होते हैं। खिलाड़ियों का उद्देश्य विरोधी टीम के गोल में बॉल फ़ेकना होता है। एक मानक मैच 30 मिनट की दो अवधियों में बंटा होता है और ज़्यादा गोल करने वाली टीम विजेता कहलाती है। हैंडबॉल का खेल भारत और दुनिया भर में लोकप्रिय है। इस खेल की शुरुवात लगभग 1860 में हुई। 1917 में जर्मनी में पहला आधिकारिक हैंडबॉल मैच खेला गया। भारत में हैंडबॉल का प्रारम्भ 1955 में हुआ और हैंडबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया (एच.एफ.आइ.) की स्थापना सबसे पहले हरियाणा में हुई थी। देश में पहली पुरुष नेशनल हैंडबॉल चैंपियनशिप 1972 में हुई।

KM jio_KM.qxd 08-10-2023 20:39 Page 3

जम्मू विश्वविद्यालय का ज्ञान केंद्र धन्वंतरि पुस्तकालय

रश्मि शर्मा

धन्वंतरि पुस्तकालय, एक शिक्षा और साहित्य केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया है जो जम्मू और कश्मीर के छात्रों को उनकी शिक्षा और साहित्यिक आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है। केन्द्रीय पुस्तकालय जिसे वर्तमान में धन्वन्तरि पुस्तकालय के नाम से जाना जाता है, केंद्रीय रूप से स्थित है और मॉड्यूलर योजना पर निर्मित है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 9,300 वर्ग फुट है, जिसमें लगभग 36.00 वर्ग फुट का ढेर क्षेत्र शामिल है।

सेंट्रल लाइब्रेरी का नाम बदलकर सिंडिकेट द्वारा 19 अप्रैल, 2000 को हुई अपनी बैठक में व्यापक प्रस्ताव संख्या 29 में धन्वंतरि लाइब्रेरी, जम्मू विश्वविद्यालय कर दिया गया था और विश्वविद्यालय परिषद द्वारा 26 अप्रैल, 2000 को आयोजित अपनी बैठक में व्यापक प्रस्ताव संख्या 51 में अनुमोदित किया गया था। सामान्य रूप से भारत और विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर में स्वतंत्रता आंदोलन और समाजवादी उद्देश्य के लिए धन्वंतरि (1902-1953) के काम और जम्मू और कश्मीर राज्य में भूमि सुधार में उनके योगदान को मान्यता देने के लिए नाम बदल दिया गया था।

जेयू के पुस्तकालय प्रणाली में लगभग 4,90,000 दस्तावेजों का संग्रह है जो दुर्लभ होने के साथ-साथ नवीनतम भी हैं, जिनमें विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, प्रबंधन, कला के क्षेत्र में किताबें, थीसिस, जर्नल और पत्रिकाओं के पिछले संस्करण आदि शामिल हैं। यह इन्फ्लिबनेट अनुभाग स्थापित करने के लिए यूजीसी सहायता प्राप्त करने वाले देश के पहले 11 विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से एक है। लाइब्रेरी ने इतने बड़े पुस्तकालय संगठन को स्वचालित करने के लिए लिबसिस 7 इंटीग्रेटेड लाइब्रेरी मैनेजमेंट सिस्टम लागू किया। लिबसिस 7 लाइब्रेरी ऑटोमेशन समाधान हाउसकीपिंग गतिविधियों को पूरी तरह से चालू कर रहा है। इंटरैक्टिव सुविधाओं में अधिग्रहण, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन, सीरियल कंट्रोल, ओपेक इत्यादि और आरएफआईडी तकनीक इसमें शामिल है जिससे इसके नियमित काम को प्रबंधित करना आसान हो जाता है।

धन्वंतरि लाइब्रेरी भारत की दूसरी बड़ी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी है जिसने नई और उभरती नवीन तकनीकों और सेवाओं के लिए आरएफआईडी तकनीक को अपनाया है, ताकि लाइब्रेरी के संचालन को स्वचालित किया जा सके जैसे सेल्फ-चेक-आउटज्चेक-इन किताबें, चोरी का पता लगाना, गुम हुई किताबों को ढूंढना, सुरक्षा नियंत्रण, स्मार्ट कार्ड जारी करना, छंटाई करना, आदि। पुस्तकालय की आरएफआईडी तकनीक 2005 से पूरी तरह से चालू है और पुणे विश्वविद्यालय के बाद आरएफआईडी तकनीक स्थापित करने वाला यह देश का दूसरा विश्वविद्यालय पुस्तकालय है।

लाइब्रेरी के अधिकारियों ने लाइब्रेरी में जल्द ही होने वाले आगामी विकासों के बारे में बताया जैसे कि आईटी सेल लाइब्रेरी जो ईकंटेंट में मदद करेगी, हेल्पडेस्क जिसके माध्यम से छात्र व्हाट्सएप पर मैसेजिंग के जरिए सवाल पूछ सकते हैं और तुरंत जवाब मिलेगा, आईआरआईएनएस डेटाबेस जो बहुत कुछ प्रदान करेगा जैसे कि शोधार्थियों को संबंधित डोमेन में उनके शोध के लिए अपार समर्थन। ग्राउंड फ्लोर पर लाइब्रेरी डिजिटल कोर्ट होगा जो विश्वविद्यालय में होने वाली सामग्री, नवीनतम पुस्तकों के आगमन, ई-जर्नल्स और कार्यक्रमों और अन्य विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करेगा।

विश्वविद्यालय अनुसंधान आउटपुट की जांच करने के लिए जिसमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्च शिक्षा संस्थानों में शैक्षणिक अखंडता को बढ़ावा देना और साहित्यिक चोरी की रोकथाम) विनियम, 2018 के अनुसार थीसिस, सारांश, शोध प्रबंध सार, शोध पत्र, प्रकाशन, परियोजना प्रस्ताव आदि शामिल हैं। 23 जुलाई, 2018, वेब आधारित साहित्यिक चोरी जांच सॉफ्टवेयर (पीडीएस शोधशुद्धि) अर्थात् %ऑरिजिनल% का उपयोग इनफ्लिबनेट द्वारा प्रदान किया गया है। वर्तमान में जम्मू विश्वविद्यालय ऑरिजिनल सॉफ्टवेयर का उपयोग करके साहित्यिक चोरी की जाँच में जम्मू-कश्मीर के सभी विश्वविद्यालयों के बीच प्रथम रैंक साझा कर रहा है।

जेयू परिवार के संरक्षकों संग साक्षात्कार

रश्मि शर्मा, अलीना शापू

प्रश्न. कृपया अपना नाम बताएं और विश्वविद्यालय में आप किस पद पर कार्यरत हैं?

मेरा नाम गुलचैन सिंह है और मैं जम्मू यूनिवर्सिटी न्यू कैंपस में सुरक्षा प्रमुख हूं। मेरी ड्यूटी सुबह 7:30 बजे शुरू होती है और दोपहर 3 बजे ख़त्म होती है। अपनी शिफ्ट के दौरान मैं अपने सभी अधीनस्थ सुरक्षा कर्मचारियों की निगरानी करता हूं, अनुपस्थित लोगों के लिए विकल्प प्रदान करता हूं और सबसे महत्वपूर्ण यह

सुनिश्चित करता हूं कि किसी भी संभावित विसंगतियों के लिए अपनी टीम को हाई अलर्ट पर रखते हुए कार्यक्रम और गतिविधियां को सुचारू रूप से चलायमान रखता हूं।

प्रश्न. आप कहाँ के निवासी हैं और आप उसके बारे में सबसे ज्यादा क्या याद करते हैं?

मेरा घर अकालपुर में है, जो मढ़ ब्लॉक में स्थित है। घर की बनी स्वादिष्ट रोटी और सुगंधित चावल अभी भी मेरी स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करते हैं और मुझे घर जाने के लिए उत्सुक करते हैं। चिनाब नदी के किनारे हरे-भरे आम के पेड़ों के बीच घूमना जिनकी हम सावधानीपूर्वक देखभाल करते थे, एक यादगार स्मृति है। सबसे बढ़कर मैं अपने प्रियजनों के साथ फिर से जुड़ने के लिए उत्सुक हूं जो मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखते हैं।

प्रश्न. आप प्रतिदिन किन चुनौतियों का सामना करते हैं?

विश्वविद्यालय समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है और यह हमेशा एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सुरक्षा कर्मचारियों को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिसमें धोखाधड़ी वाली प्रविष्टियों से निपटना, असहयोगी व्यक्तियों के साथ बहस से निपटना और आमतौर पर सुनी जाने वाली धमकियों विशेष रूप से 'मेरा बाप' जैसी धमकी को संबोधित करना शामिल है। इन चुनौतियों के बावजूद स्टाफ आगे बढ़कर और मज़बूत रहकर सभी को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित और दृढ़ संकल्पित है।

विशेष दीक्षांत समारोह में स्थानीय भाषाओं व संस्कृति को बढ़ावा

रश्मि शर्मा

जम्मू विश्वविद्यालय का विशेष दीक्षांत समारोह जनरल जोरावर सिंह सभागार में हुआ जिसमें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मुख्य अतिथि रहे। उपराज्यपाल और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोज सिन्हा ने समारोह की अध्यक्षता की। इस दौरान 2016 से 2019 तक यूजी और पीजी में श्रेष्ठ अंक हासिल करने वाले 211 छात्रों को स्वर्ण पदक और पीएचडी के 265 शोधार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गई। कुलपति प्रो. उमेश राय ने जेयू की उपलब्धियों से उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और उपराज्यपाल को अवगत करवाया।

विश्वविद्यालय में वेस्टर्न कपड़ों की बराबरी करते एथनिक वियर

हरप्रीत कौर

कपड़ों का निर्माण शरीर को ढकने, गर्मी या ठंडक प्रदान करने, सुरक्षा प्रदान करने और किसी की विनम्रता को उसके मूल रूप में बनाए रखने की मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने के लिए किया गया था, लेकिन यह अधिक परिष्कृत रूपों में विकसित हुआ है। कपड़ों का उपयोग अब स्वयं को सौंदर्यपूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने, स्वयं की ओर ध्यान आकर्षित करने, शारीरिक विशेषताओं को बढ़ाने, असुरक्षाओं को छिपाने और आकर्षण प्रदर्शित करने के लिए किया जाता हैं। मनुष्य द्वारा शरीर ढकने के आविष्कार ने समकालीन कपड़ों के विकास की नींव रखी। पूरे इतिहास में कपड़ों का उपयोग मनुष्य के धार्मिक विचारों और झुकावों के साथ-साथ उसके स्थान को दर्शाने के लिए भी किया जाता रहा हैं। कपड़ों का उपयोग लोगों के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आदर्शों को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। टेक्नोलॉजी और सोशल मीडिया के इस युग में फैशन ट्रेंड तेज़ी से बदलता है। हाल के वर्षों में भारतीय युवाओं की फैशन पसंद में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। सोशल मीडिया और वैश्विक प्रभाव के बढ़ने के साथ भारतीय युवा फैशन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला से अवगत हुआ है। आजकल की युवा पीढ़ी बदलते फैशन ट्रेंड्स के कारण हर वर्ष अपनी फैशन चॉइस पुरी तरह से बदल रही है।

एल्युमिनी स्पीक्स

हरप्रीत कौर, हिमानी कंधारी

नमस्ते !

मेरा नाम अभिलव महाजन है और मैं जेकेएएस अधिकारी हूं। मैं इस पत्र 'जम्मू यूनिवर्सिटी पोस्ट' के माध्यम से एक एस्पिरेंट से एक सिविल सेवक तक की अपनी यात्रा और मेरे करियर को आकार देने में जम्मू विश्वविद्यालय की भूमिका को साझा करूंगा। जब भी मैं अपनी सिविल सेवक बनने की यात्रा को याद करता हूं तो मैं जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा मेरे पेशेवर प्रक्षेप पथ को आकार देने में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के लिए कृतज्ञता से भर जाता हूं। एक राजनीतिक विज्ञान विद्वान के रूप में इस प्रतिष्ठित संस्थान ने मुझे न केवल ज्ञान का खजाना दिया, बल्कि मेरे कौशल और कार्य नैतिकता को भी निखारा जिसने मेरे करियर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा

देने के लिए विश्वविद्यालय की अटूट प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद। अब मैं अपने रास्ते में आने वाली जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हूं।

मेरा विश्वविद्यालय का अनुभव काफी समृद्ध रहा, पाठ्येतर गतिविधियाँ जिसने मुझे कई खेल आयोजनों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति दी। इससे मुझे एक सर्वांगीण व्यक्तित्व विकसित करने में मदद मिली और मुझे सिखाया गया कि एक टीम में प्रभावी ढंग से कैसे काम किया जाए। कैंपस लाइब्रेरी जानकारी के लिए मेरा पसंदीदा संसाधन थी जिसमें पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का विशाल संग्रह मुझे मेरी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता था।

कुल मिलाकर मुझे इतना समृद्ध और परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करने के लिए जम्मू विश्वविद्यालय का बहुत आभारी हूं जिसने मुझे भविष्य में आने वाली किसी भी चुनौती से निपटने के लिए तैयार किया है। मैं एक सिविल सेवक बनने की अपनी यात्रा और जम्मू विश्वविद्यालय ने मेरे करियर को आकार देने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस पर विचार करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाने के लिए उत्साहित हूं। विश्वविद्यालय मुझे एक शिक्षार्थी और भावी कार्यकर्ता के रूप में विकसित करने, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों में अटूट रहा है जो मेरी पेशेवर यात्रा में अमूल्य रहे हैं। मुझे इतना समृद्ध अनुभव प्रदान करने के लिए मैं जम्मू विश्वविद्यालय का बहुत आभारी हूं जिसने मुझे भविष्य में मेरे रास्ते में आने वाली हर चुनौती से निपटने के लिए तैयार किया है।

जानिए क्या है जेयू के वानस्पतिक उद्यान में फाइकस कृष्णा

कोमल देवी

फाइकस कृष्णा वृष, सामान्य नाम- कृष्णा फिग; हिंदी में कृष्ण बढ़ के नाम से जाना जाता है। यह जम्मू विश्वविद्यालय के वानस्पतिक उद्यान में भी पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम फाइकस कृष्णा है और यह मोरेसी (शहतूत परिवार) से आता है। फाइसस कृष्णा पेड़ पहली बार भारत में पश्चिमी घाट के सुदूर वर्षावनों में खोजा गया था, जो एक पारिस्थितिक हॉटस्पॉट है जो अपनी अविश्वसनीय विविधता के लिए जाना जाता है। हिंदू देवता कृष्ण के नाम पर रखे गए इस पेड़ का नामकरण इसकी रहस्यमय प्रकृति का संकेत देता है। यह खोज अपने आप में वनस्पतिशास्त्रियों के लिए उत्साह का क्षण थी, क्योंकि पेड़ ने ऐसे लक्षण प्रदर्शित किए जो पहले पौधे साम्राज्य में नहीं देखे गए थे। कृष्णा फिग एक बहुत बड़ा, तेजी से बढ़ने वाला, 30 मीटर तक ऊंचा सदाबहार पेड़ है, जिसकी शाखाएं फैली हुई होती हैं और कई हवाई जड़ें भी होती हैं। पत्तियाँ डंठल वाली, अंडाकार दिल के आकार की, 3 तंत्रिकायुक्त, युवा होने पर दोनों तरफ मखमली होती हैं। पेड़ की अनूठी विशेषता यह है कि पत्तियों के आधार पर जेब जैसी तह होती है। पत्ती के डंठल शीर्ष पर एक चौड़ी चिकनी ग्रंथि के साथ संकुचित नीचे की ओर। भारत में अधिकांश चीजों की तरह, इस पेड़ की पत्तियों से संबंधित कृष्ण की एक पौराणिक कहानी है। कहानी यह है कि भगवान कृष्ण को मक्खन बहुत पसंद था और वे इसे चुराते भी थे। एक बार जब उन्हें उनकी मां यशोदा ने पकड़ लिया था तो उन्होंने मक्खन को इसी पेड़ के पत्ते में

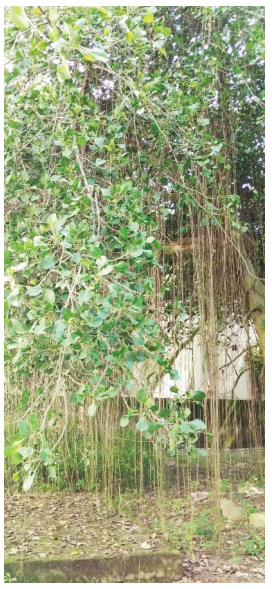

लपेटकर छुपाने की कोशिश की थी। तभी से इन पेड़ों की पत्तियों ने इसी आकार को बरकरार रखा है। फायसियस कृष्णा पेड़ प्राकृतिक दुनिया के आश्चर्यों का एक प्रमाण है। इसका जटिल शाखा पैटर्न और इंद्रधनुषी पत्तियां कल्पना को आकर्षित करती हैं और पौधों के विकास की हमारी समझ को चुनौती देती हैं। जैसा कि हम अपने ग्रह की जैव विविधता की रक्षा करने का प्रयास करते हैं, फाइसस कृष्णा पेड़ दुनिया के छिपे हुए खजाने को संरक्षित करने के महत्व की याद दिलाता है जिससे आने वाली पीढ़ियों को प्रकृति की सुंदरता और जटिलता पर आश्चर्य होता रहता है।

KM jio_KM.qxd 08-10-2023 20:39 Page 4

'नई शिक्षा नीति के आने से खेलकूद के क्षेत्र में क्रांति': खेल निदेशक

महाजन रोहन

जम्मू विश्वविद्यालय के खेल एवं शारीरिक शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. दाउद इकबाल बाबा ने जम्मू यूनिवर्सिटी पोस्ट से बात की

प्रश्न. जम्मू विश्वविद्यालय के खेल एवं शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2023 में अब तक क्या क्या उपलब्धियाँ हासिल की गयी हैं?

वर्ष 2023 में निदेशालय ने काफ़ी इवेंट्स करवाए हैं जैसे ÷ऑल इंडिया अंतर-विश्वविद्यालय फेंसिंग चैंपियनशिप,÷ जिसकी मेजबानी जम्मू विश्वविद्यालय ने ही की। इस प्रतियोगिता में हमने तीसरा स्थान हासिल करके कांस्य पदक जीता और इस में से जेयू के महिला और पुरुष वर्ग में 16 बच्चों ने खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के लिए क्वालिफाई किया। इतना ही नहीं हमारे खिलाड़ियों ने उस प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर 3 कांस्य पदक भी जीते। वहीं इसी साल हमने अंतर-विश्वविद्यालय ÷चांसलर ट्रॉफी÷ भी आयोजित की जिसमें जम्मू-कश्मीर के लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने भाग लिया और उसमें भी जम्मू विश्वविधालय ही ओवरआल चैंपियन रहा। अभी हाल ही में टेबल टेनिस की सीनियर राष्ट्रीय और अंतर-राज्य चैंपियनशिप भी जम्मू-कश्मीर टेबल टेनिस एसोसिएशन के सहयोग से जम्मू विश्वविद्यालय में ही आयोजित हुई थी।

प्रश्न. विभाग द्वारा आयोजित होने वाली आगामी खेल गतिविधियाँ क्या होंगी और विभाग उनमें किस प्रकार से विश्वविद्यालय के अन्य विभागों को शामिल करेगा?

समावेशिता हेतु पिछले दिनों निदेशालय ने पूरी यूनिवर्सिटी के कर्मचारियों के लिए एक टूर्नामेंट का आयोजन किया जिसमें लगभग 300 कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उसके बाद हमने छात्रों का अंतर-विभागीय टूर्नामेंट करवाया जिसमें 500 से ज्यादा छात्रों ने अपनी खेल प्रतिभा दिखाई। ये तमाम टूर्नामेंट हमारे वार्षिक खेल कैलेंडर का हिस्सा रहते हैं। इसके अलावा हम जम्मू विश्वविद्यालय के अधीन सभी कॉलेजों के लगभग 40 से अधिक अंतर कॉलेज स्पोर्ट्स इवेंट्स यहां पर आयोजित करते हैं। बात रही आगामी खेल गतिविधियों की तो आने वाले समय में जम्मू के अधिकांश प्रमुख कार्यक्रम हमारे जम्मू विश्वविद्यालय में ही होने जा रहे हैं। अभी जेके क्रिकेट एसोसिएशन भी हमारे साथ संपर्क में है और शायद जनवरी 2024 में रांझी ट्रॉफी के 4 मैच जेयू क्रिकेट ग्राउंड पर ही खेले जाएंगे। इसके बाद भी बहुत सारे इंटर-कॉलेज, इंटर-यूनिवर्सिटी और राष्ट्रीय स्तर तक के टूर्नामेंट हमारे क्रम में हैं।

प्रश्न. विभाग के पास फंड्स और इंफ्रास्ट्रक्चर के संदर्भ में क्या संसाधन हैं और विभाग अपनी योजनाओं को कैसे प्राथमिकता देता है?

विभाग के पास फंड्स की अभी कोई कमी नहीं है। गत कुछ वर्षों में हमें जम्मू विश्वविद्यालय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी काफी ज्यादा फंड मिले हैं। खेल फंड्स को लेकर पिछले 4 साल में काफी बढ़ोतरी हुई है और जहाँ 2018 में हमारे पास प्रतिवर्ष 30-35 लाख रुपये आते थे, आज वो 80 लाख

से ऊपर पहुँच चुका है और आने वाले समय में और भी बढ़ता जाएगा। शिक्षा के क्षेत्र में पहले से ही उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे जम्मू विश्वविद्यालय को स्पोर्ट्स हब में बदलने के लिए कैंपस बजट 2023-24 में विशेष धनराशि रखी गई है। जेयू में बीते 5 से 6 सालों में सोपर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर का अनेकगुना परिवर्द्धन हुआ है। हमने हाल ही में एक विश्वस्तरीय 400 मीटर सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का निर्माण किया है जिस पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं भी आयोजित हो सकती हैं। जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू और कश्मीर में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक रखने वाला पहला संस्थान है। इसके साथ ही खो-खो मैदान, हैंडबॉल और बास्केटबॉल कोर्ट को भी सिंथेटिक टर्फ से लैस कर तैयार किया जा रहा है। वॉलीबाल का कोर्ट पहले ही तैयार हो चुका है और दस मीटर शूटिंग रेंज एवं बहुउद्देशीय हॉल सहित मानक बुनियादी ढांचे का परिवर्द्धन कार्य भी जारी है। क्रिकेट में भी हमने अंतरराष्ट्रीय स्तर की पिच एंड फील्ड तैयार की है जो जम्मू-कश्मीर के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट मैदानों में से एक है।

प्रश्न. वर्तमान में विश्वविद्यालय परिसर में कितने खेल उपलब्ध हैं?

जेयू परिसर में वर्तमान में कई इंडोर व आउटडोर खेल उपलब्ध हैं। इनमें क्रिकेट, फुटबाल, हैंडबाल, बास्केटबॉल, बैटमिंटन, योग, बॉक्सिंग, वुशू, वॉलीबाल, कब्बडी, खो-खो, टेबल टेनिस, शतरंज, कैरम, फैंसिंग, ताइक्वांडो आदि शामिल हैं। अब जम्मू यूनिवर्सिटी न सिर्फ अपने छात्रों के लिए खेल के क्षेत्र में काम कर रही है बल्कि नागरिक समाज और स्कूलों में पढ़ रहे बाहरी छात्रों पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। हमने एक ÷पे एंड प्ले÷ कल्चर की शुरुआत की है जिसमें विभिन्न खेल अकादमियों में बच्चे नामांकित हो रहे हैं। इसके तहत हम कुछ फीस लेते हैं और बदले में बच्चों को मूलभूत सुविधाएँ, इंफ्रास्ट्रक्चर एवं कोचिंग भी प्रदान करते हैं। निदेशालय का लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में जेयू कम से कम 18 से 20 खेल अकादमियाँ चलाए, जिनमें से 6 - 7 अकादमियाँ इस समय सफलतापूर्वक चल रही हैं।

प्रश्न. आपके दृष्टिकोण में नई शिक्षा नीति 2020 में खेलकूद का महत्व क्या है? और इसका खेल और शारीरिक शिक्षा पर क्या फोकस है?

नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। मेरी नज़र में नई शिक्षा नीति के आने से खेलकूद के क्षेत्र में एक ज़बरदस्त क्रांति हुई है। जहाँ पहले खेल केवल पाठ्येतर का हिस्सा थे, वहीं अब यह पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं। अब प्रत्येक स्कूल और कॉलेज में खेल और शारीरिक शिक्षा वैकल्पिक विषय नहीं बल्कि एक अनिवार्य विषय है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ खेलों को लेके पूरी तरह से सुशिक्षित एवं जागरूक होंगी और उनके पास इसमें करियर के भी अवसर होंगे। खेल विकास एक सतत प्रक्रिया है और एन.ई.पी इसे और मजबूत करेगा।

प्रश्न. विभाग के सामने कौन-कौन सी चुनौतियाँ हैं और विभाग इन्हें कैसे पार करने का प्रयास कर रहा है?

निदेशालय के सामने वर्तमान समय में पहली मुख्य चुनौती है मानव संसाधन की कमी जिसे पूरा करने के लिए हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए हमने जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, प्रो. उमेश राय जी से भी अनुरोध किया है और वे भी इसमें अपनी पूरी रुचि दिखा रहे हैं। दूसरी बड़ी चुनौती है खेल नीति का न होना लेकिन अब हमारी अपनी पहली खेल नीति है जो कि विभाग के अधिकारियों ने दो साल लगाकर तैयार की है और वह इस शैक्षणिक सत्र से लागू हो जाएगी। विभाग को राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होने के लिए उच्च स्तरीय शिक्षकों व प्रशिक्षकों की आवश्यकता है। इसके लिए हम लगातार बैठकें कर रहे हैं और संभावना है कि जल्द ही हमारे पास 3 कोच और आ जाएंगे जिन्हें वित्तीय समिति ने मंजूरी दे दी है। निदेशालय अपने जोश, आत्मविश्वास और समन्वित प्रयासों से विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

भारत की चंद्रमा पर सफल और ऐतिहासिक लैंडिंग

हरप्रीत कौर, पलक सिंह

दुनिया आश्चर्यचकित है क्योंकि उभरती हुई महाशक्ति भारत ने चंद्रमा की सतह के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बनकर इतिहास रच दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस उपलब्धि के लिए सभी भारतीयों और अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों को बधाई दी। पीएम मोदी ने कहा, 'भारत इस दिन को हमेशा याद रखेगा।' अभियान की असली परीक्षा लैंडिंग के आखिरी चरण में शुरू हुई जब लैंडिंग से 20 मिनट पहले इसरो ने स्वचालित लैंडिंग अनुक्रम शुरू किया, जिसने विक्रम लैंडर अपने ऑनबोर्ड कंप्यूटर तर्क का उपयोग कर एक अनुकूल स्थान की पहचान करके चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने की अनुमति दी। विशेषज्ञों का कहना है कि मिशन की सफलता के लिए अंतिम 15 से 20 मिनट महत्वपूर्ण थे क्योंकि चंद्रयान-3 का विक्रम लैंडर सॉफ्ट लैंडिंग के लिए नीचे उतर था। देश और दुनिया भर में भारतीयों ने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग के लिए प्रार्थनाएं थी। भारत के दूसरे लूनर मिशन मिशन के इतिहास को देखते हुए, जो लैंडिंग से पहले आखिरी 20 मिनट के दौरान विफल रहा, इस बार ISRO अधिक सतर्क था। चंद्रमा पर उतरने से कुछ मिनट पहले अंतरिक्ष यान के लिए उच्च जोखिम के कारण इस अवधि को कई लोगों द्वारा 'खतरे के 17 या 20 मिनट' कहा जाता है। इस चरण के दौरान पूरी प्रक्रिया स्वायत्त हो गई, जहां विक्रम लैंडर ने सही समय पर अपने स्वयं के इंजन को प्रज्वलित किया। पूर्व इसरो प्रमुख जी. माधवन नायर ने कहा 'चंद्रयान 3 की सफलता से भारत के अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक अनुबंधों को और बढ़ावा मिलेगा क्योंकि इसकी तकनीकी क्षमता और लॉन्च सिस्टम को स्वीकृति मिलेगी।' बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कहा कि उनका देश चंद्रयान-3 की कामयाबी पर भारत के लिए खुश है। चंद्रयान मिशन की सफलता विज्ञान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र को आगे बढ़ाने में सभी दक्षिण एशियाई देशों के लिए बेहद गर्व और प्रेरणा का विषय है।' तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और प्रधानमंत्री मोदी को भारत के 'चंद्र मिशन' 'चंद्रयान-3' की सफल परिणति के लिए बधाई दी।

पृष्ठ 1 से आगे

जेयू ने मनाया 54वां स्थापना

करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है। इससे पहले, इस ऐतिहासिक अवसर पर उपराज्यपाल एवं जम्मू विश्वविद्यालय के चांसलर को जम्मू-कश्मीर के उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा शिक्षण-कुल गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

जेयू के कुलपति प्रो. उमेश राय ने कहा कि यह समारोह सभी छात्रों, पूर्व छात्रों, विद्वानों, कर्मचारियों, गैर राजपत्रित व गैर शिक्षण अधिकारियों को एक साथ लाने का एक खास मौका है तथा एक साल की उपलब्धियों को साझा करने का बढ़िया मंच है। कुलपति ने आगे विश्वविद्यालय की प्रमुख पहलों का अवलोकन देते हुए कहा कि जेयू अद्वितीय और अभिनव परियोजना कॉलेज ऑन व्हील्स या जेके ज्ञानोदय का नेतृत्व कर रहा है, जिसके माध्यम से प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के सौ संकाय सदस्यों के साथ लगभग आठ सौ छात्र भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करेंगे।

स्थापना दिवस के इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व एवं कार्यरत कर्मचारियों को सराहनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

सामुदायिक रेडियो लाने

जम्मू विश्वविद्यालय में स्थापित यह सामुदायिक रेडियो जम्मू-कश्मीर के इतिहास में अपनी तरह का पहला रेडियो है। ये सामाजिक मुद्दों एवं सामुदायिक विकास पर आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से नागरिक समाज के साथ निकट संपर्क स्थापित करेगा। रेडियो स्टेशन ध्वनि में छात्र रेडियो जॉकी, सामग्री निर्माता के तौर पर काम करेंगे।

वनडे विश्व कप की प्रतीक्षा में छात्र

महाजन रोहन

हाल ही में हुए एशिया कप के बाद अब एक दिवसीय क्रिकेट विश्व कप का काउंटडाउन शुरू हो चुका है जिसका आयोजन भारत की मेज़बानी में होना है। आईसीसी-बीसीसीआई द्वारा जारी शेड्यूल के मुताबिक 5 अक्टूबर से शुरू हो रहा क्रिकेट का ये 'महाकुंभ टूर्नामेंट' 19 नवंबर तक चलेगा और इसमें 45 लीग गेम एवं तीन प्लेऑफ़ सहित 48 मैच खेले जाएंगे। 'आईसीसी पुरुष वनडे क्रिकेट विश्व कप 2023' क्रिकेट विश्व कप का 13वां संस्करण होगा। पिछले बारह संस्करणों में विशेष रूप से भारत ने 2011 और 1983 में दो बार टूर्नामेंट जीता है। वहीं 2019 विश्व कप संस्करण जीतने के बाद इंग्लैंड मौजूदा चैंपियन है। इस विश्व कप में भारत, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और नीदरलैंड्स को मिलाकर कुल 10 टीमें हिस्सा लेंगी। इस टूर्नामेंट के मैच भारत के दस अलग-अलग शहरों3 हैदराबाद, अहमदाबाद, धर्मशाला, दिल्ली, चेन्नई, लखनऊ, पुणे, बेंगलुरु, मुंबई और कोलकाता में खेले जाएंगे।

अगामी वर्ल्ड कप में भारतीय फैंस को अपनी टीम से काफी उम्मीदें हैं। इसी को लेकर जम्मू विश्वविद्यालय के युवाओं ने भी अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दी हैं।

'2011 विश्व कप भारत में हुआ था और टीम इंडिया चैंपियन बनी थी। इसके बाद भारत ने 2013 चैंपियंस ट्रॉफी के बाद से कोई भी बड़ा आईसीसी टूर्नामेंट नहीं जीता है और एक दशक से विश्व कप खिताब भी टीम इंडिया से दूर है। उम्मीद है कि 2023 वनडे विश्व कप रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम इंडिया अपने घर पर में जरूर जीतेगी।'

– बाबर इरशाद त्रक, खेल एवं शारीरिक शिक्षा विभाग

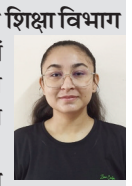

मैं चाहूंगी कि भारतीय टीम की रीढ़ विराट कोहली वर्ल्ड कप में खूब रन बनाए जो भारत की जीत में आएं। उनके खेलने की शैली अद्भुत है और एक दिवसीय फॉर्मेट में बेमिसाल है। भारतीय टीम का अपने घरेलू मैदान पर प्रदर्शन देखना मज़ेदार रहेगा।

डुलसेट गेहलोच, कंप्यूटर साइंस एवं आईटी विभाग

विश्व कप के मुकाबले हमेशा ही खेल प्रेमियों में एक नई उर्जा भर देते हैं। दुनिया भर के करोड़ों लोग इन मैचों को देखने के लिए उत्साहित व इंतजार में रहते हैं। इस टूनामेंट से केवल फैंस का ही मनोरंजन नहीं होता है बल्कि प्रायोजकों को भी करोड़ों रुपयों का फायदा होता है।

आशुतोष पराशर, गणित विभाग

हम भारत और पाकिस्तान के ब्लॉकबस्टर मुकाबले को लेकर सुपर एक्साइटेड हैं जो संशोधित तिथि के अनुसर अहमदाबाद में दुनिया के सबसे बड़े नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। यह मुक़ाबला वाकई रोमांचक होगा।'

आलिया कोहली, खेल एवं शारीरिक शिक्षा विभाग

संपादक मंडलः प्रधान संपादक - प्रो. श्याम नारायण लाल, प्रबंध संपादक - डॉ. गरिमा गुप्ता, न्यूज एडिटर - डॉ. प्रदीप सिंह,
उपसंपादक - महाजन रोहन, रश्मि शर्मा, हिमानी कंधारी, हरप्रीत कौर, कोमल देवी, प्रकृति सम्ब्याल, भाषा विशेषज्ञ - शुभम मनकोटिया